

एकीकृत कृषि प्रणाली में पशुधन को शामिल करना अत्यंत उपयोगी

चर्चा में क्यों?

21 फरवरी, 2022 झारखंड में राँची के बरिसा कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू) कॉलेज ऑफ़ वेटेरनरी साइंस एंड एनमिल हसबैंडरी द्वारा आयोजित 21 दविसीय राष्ट्रीय पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के समापन पर किसानों के लिये एक वचिर मंथन और प्रशिक्षण कार्यक्रम में वशिषज्जों ने गाय, भैंस, बकरी, सुअर, मुर्गीपालन, मछली और बतखपालन गतविधियों जैसे पशुधन को एकीकृत खेती में शामिल करने पर ज़ोर दिया ।

प्रमुख बडि

- बीएयू के कुलपतिओंकार नाथ सहि ने कहा कि पशुधन की नवीनतम तकनीकों को शामिल करते हुए कृषि प्रणाली में प्रबंधन, किसानों की आय दोगुनी करने का एक बेहतर विकल्प है, जिससे देश में छोटे और सीमांत किसानों की बेहतर आजीविका और पोषण सुरक्षा मज़बूत होगी ।
- गौरतलब है कलिंगभग 60 एकीकृत कृषि प्रणालियों की पहचान की गई है और पूरे देश के वभिन्न जलवायु क्षेत्रों के लिये सचिति एवं गैर-सचिति परस्थितियों के अनुरूप विकसति की गई है ।
- शोध में वैज्ञानिकों ने एकीकृत कृषि प्रणाली को देश के किसानों की आय बढ़ाने का सबसे उपयुक्त माध्यम पाया है ।
- एकीकृत कृषि प्रणाली एक संपूरण कृषि प्रबंधन प्रणाली है, जिसका उद्देश्य अधिक टिकाऊ कृषि प्रदान करना है । यह कृषि प्रणालियों में पशुधन और फसल उत्पादन का एकीकृत करती है ।
- एकीकृत कृषि प्रणालियों ने पशुधन, जलीय कृषि, बागवानी, कृषि-उद्योग और संबद्ध गतविधियों की पारंपरिक खेती में क्रांतिला दी है । इस प्रणाली में आधार के रूप में फसल गतविधिके साथ अन्य उद्योगों के अंतर-संबंधति सेट शामिल है, इसमें एक घटक से 'अपशषिट' ससिटम के दूसरे भाग के लिये एक इनपुट बन जाता है, जिससे लागत कम हो जाती है और मटिटी के स्वास्थय में सुधार होता है एवं उत्पादन और आय में वृद्धि होती है ।